वाणिज्य शिक्षा की आवश्यकता (Need of Teaching of Commerce)

आधुनिक युग में सभी विकसित, विकासशील तथा अविकसित देशों में वाणिज्य शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। वाणिज्य शिक्षा के द्वारा ही विकसित राष्ट्र अपने विकास को और अधिक सुदृढ़ बनाकर आगे बढ़ा सकते हैं, इसी की सहायता से विकासशील अपने विकास को आगे बढ़ा सकते हैं तथा वाणिज्य शिक्षा की सहायता से ही अविकसित राष्ट्र विकास की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। वाणिज्य-शिक्षा की सहायता से समाज तथा व्यक्ति भी अपनी आर्थिक तथा भौतिक उन्नति कर सकते हैं। संक्षेप में, यदि हम क्रमानुसार उल्लेख करें तो कह सकते हैं कि वाणिज्य शिक्षा की निम्नलिखित कारणों से आवश्यकता है—

(1) सुनियोजित विकास—वाणिज्य-शिक्षा वास्तव में किसी वाणिज्य के विभिन्न पहलुओं की शिक्षा है। इस शिक्षा की सहायता से सुनियोजित विकास सम्भव है। वाणिज्य

Scanned by TapScanner

शिक्षा से हम राष्ट्र तथा समाज की विभिन्न वाणिज्यिक गतिविधियों का सुनियोजित विकास कर सकते हैं। इस प्रकार की शिक्षा से किसी व्यक्ति विशेष के व्यावसायिक क्रियाकलाप तथा किसी एक उद्योग तथा व्यवसाय के कार्यकलापों का सुनियोजित विकास कर सकते हैं। वाणिज्य शिक्षा हमें बताती है कि व्यवसाय के किस पहलू पर क्या जोर तथा महत्व देना है। व्यवसाय के विकास पक्ष का कब तथा कितना विकास करना है, यह हमें वाणिज्य-शिक्षा ही बताती है और यही सुनियोजित विकास है।

(2) आर्थिक एवं भौतिक उन्नति हेतु—राष्ट्र, समाज तथा व्यक्ति स्वयं की आर्थिक एवं भौतिक उन्नति के लिये वाणिज्य शिक्षा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। वाणिज्य की शिक्षा, वाणिज्य की स्थापना, संचालन, संगठन तथा ऐसे ही अन्य अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं का ज्ञान प्रदान करती है। इस ज्ञान की सहायता से व्यापार तथा उद्योग की स्थापना, संचालन आदि में सफलता प्राप्त होती है। इससे नये-नये उद्योग स्थापित होते हैं, उन्नत होते हैं तथा भौतिक तथा आर्थिक उन्नति में सहायक होते हैं। इसकी सहायता से मनुष्य व्यापार करके धन कमाना सीखता है। वह इस प्रकार के ज्ञान से आर्थिक उन्नति के नये-नये क्षेत्रों की खोज करता है, उनमें प्रविष्ट करता है तथा उन्नति करता है। इससे राष्ट्र तथा समाज की आर्थिक उन्नति होती है।

(3) प्राकृतिक सम्पदाओं का शोषण—प्रकृति ने हमें विविध तथा प्रचुर सम्पदायें प्रदान की हैं। इन प्रकृति-प्रदत्त विविध सम्पदाओं की खोज कर उनका उपयोगी दोहन एवं शोषण करने पर ही आर्थिक एवं नैतिक उन्नति निर्भर करती है। इसी से नये-नये उद्योगों की स्थापना को बल मिलता है तथा राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर होता है। वाणिज्य शिक्षा हमें बताती है कि प्रकृति ने हमें कौन-कौन सी प्राकृतिक सम्पदायें दी हैं तथा उनका किस प्रकार दोहन तथा शोषण किया जा सकता है। जिस व्यक्ति या समाज के पास इन सम्पदाओं के दोहन के साधन प्राप्त हैं तथा जो दोहन कर भी रहे हैं, वे ही आर्थिक उन्नति कर सके हैं। वाणिज्य शिक्षा के ज्ञान से प्राकृतिक सम्पदाओं का पता लगाकर नये-नये उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। इससे आर्थिक विकास सम्भव होता है।

(4) आर्थिक एवं अन्य साधन जुटाने में सहायता—प्रत्येक व्यावसायिक उपक्रम के लिये कतिपय आर्थिक तथा दूसरे अन्य प्रकार के संसाधन जुटाने की आवश्यकता पड़ती है। बिना इन संसाधनों के जुटाये किसी भी प्रकार वाणिज्यिक उपक्रम चालू नहीं किया जा सकता है। वाणिज्य शिक्षा हमें बताती है कि किसी भी वाणिज्यिक उपक्रम की स्थापना के लिये आवश्यक संसाधनों को कैसे, कहाँ से तथा किस-किस मात्रा में जुटाये जायें, इन सबका ज्ञान कराती है। किसी भी आर्थिक तथा व्यावसायिक उपक्रम की स्थापना के लिये भूमि, श्रम, पूँजी, साहस तथा संगठन की आवश्यकता होती है। उपक्रम की विशालता को ध्यान में रखकर ही इन पाँच तत्वों की व्यवस्था करनी पड़ती है। वाणिज्य शिक्षा हमें बताती है कि उत्पादन के किस तत्व की कितनी मात्रा में व्यवस्था की जाये। यदि इन तत्वों की मात्रा में समन्वय नहीं होगा तो अधिकतम प्रतिफल भी नहीं मिलेगा।

Scanned by TapScanner

(5) व्यापारिक कुशलता का विकास—किसी भी व्यापार की सफलता बहुत कुछ व्यापारी की कुशलता पर निर्भर करती है। वाणिज्य शिक्षा एक व्यक्ति में उन मानवीय तथा व्यावसायिक गुणों का सहजता के साथ विकास करती है, जो एक सफल व्यापारी में होने चाहियें। वाणिज्य-शिक्षा व्यक्ति में व्यावसायिक दक्षता का विकास करती है। किसी व्यापार का किस प्रकार संचालन किया जाये, किस प्रकार निर्णय लिये जायें, किस प्रकार तथ्यों का संगठन किया जाये, श्रम से किस प्रकार कार्य लिया जाये, किस प्रकार उत्पाद को बाजार में भेजा जाये आदि सभी बातें वाणिज्य शिक्षा से ही विकसित हो पाती हैं। वाणिज्य-शिक्षा से ही कोई व्यक्ति कुशल व्यापारी बन पाता है।

(6) श्रम-व्यवस्था तथा कल्याण—वाणिज्य मात्र आर्थिक तथा भौतिक उन्नति का ही विज्ञान नहीं है, इसके अपने कुछ विशिष्ट मानवीय मूल्य भी हैं। इन मूल्यों का बहुत कुछ मात्रा में वाणिज्य में श्रमिकों पर उपयोग किया जाता है। वाणिज्य शिक्षा हमें सिखाती है कि किस प्रकार श्रमिकों की व्यवस्था की जाये, किस प्रकार उनसे अधिकाधिक मात्रा में काम लिया जाये तथा इसके साथ ही हम किस प्रकार अपने श्रमिकों का कल्याण कर सकें। जिस उद्योग के श्रमिक अपने उद्योग से जितने संतुष्ट होंगे, श्रमिक उतना ही अधिक तथा अच्छा एवं लगन से वहाँ कार्य करेंगे। श्रम-सम्बन्धों को कैसे मधुर बनाया जाये, जिससे श्रम-समस्यायें कम से कम हों, यह हमें वाणिज्य शिक्षा से ही ज्ञात होता है।

(7) कार्यालय-व्यवस्था का ज्ञान—प्रत्येक व्यावसायिक उपक्रम का कार्यालय उसका हृदय होता है। शरीर में जो स्थान हृदय का है, व्यवसाय में वही स्थान कार्यालय का है। यदि कार्यालय की व्यवस्था ठीक है तो सम्पूर्ण व्यवसाय भी ठीक चलेगा। वाणिज्य शिक्षा हमें ज्ञान देती है कि किसी कार्यालय-व्यवस्था के लिये भी वाणिज्य शिक्षा आवश्यक है। वाणिज्य-शिक्षा कार्यालय में दिन-प्रतिदिन काम आने वाले श्रम एवं समय बचाने वाले विविध यंत्रों का भी ज्ञान देती है। इन यंत्रों का क्या उपयोग है, इनका कैसे प्रयोग किया जाये तथा इनका रख-रखाव कैसे किया जाये, आदि सभी बातों की जानकारी हमें वाणिज्य-शिक्षा से प्राप्त होती है।

(8) देशी एवं विदेशी व्यापार का ज्ञान—वाणिज्य-शिक्षा हमें देशी तथा विदेशी (अन्तर्राष्ट्रीय) व्यापार का ज्ञान प्रदान करती है। वाणिज्य में हम देशी तथा तटीय व्यापार का अध्ययन करते हैं कि देश की व्यापारिक स्थिति क्या है ? देश किन-किन वस्तुओं का निर्माण करता है, किन-किन का निर्यात तथा आयात करता है ? इस प्रकार के ज्ञान से व्यक्ति को अपना व्यापार तथा वाणिज्यिक उपक्रम करने में सुविधा होती है।

(9) आर्थिक समस्याओं का समाधान—प्रत्येक व्यक्ति तथा समाज के सामने समय-समय पर आर्थिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। वाणिज्य शिक्षा हमें इतनी कुशलता प्रदान करती है, जिससे व्यक्ति इस प्रकार की विविध धार्मिक समस्याओं तथा कठिनाइयों का सरलता से समाधान कर लेता है। वाणिज्य शिक्षा व्यक्ति में समस्या-समाधान की योग्यता का विकास करने के लिये बड़ी उपयोगी है।

(10) व्यवसाय के चयन में सहायक—वाणिज्य-शिक्षा व्यवसाय के चयन में भी हमारी सहायता करती है। वाणिज्य के क्षेत्र में अनेक प्रकार के व्यवसाय उपलब्ध हैं।

Scanned by TapScanner

वाणिज्य-शिक्षा इन उपलब्ध व्यवसायों का ज्ञान हमें देती है और इनमें से कोई उपयुक्त व्यवसाय का चयन करने में हमारी सहायता करती है।

(11) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सुधार—वाणिज्य द्वारा विशेष तौर से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में सुधार होता है। वाणिज्य-शिक्षा हमें यह ज्ञान कराती है कि किस प्रकार किन वस्तुओं में तथा किन देशों के साथ व्यापार किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कुशलता के लिये वाणिज्य-शिक्षा परमावश्यक है।

(12) व्यक्तिगत महत्व—व्यक्तिगत क्षेत्र में व्यापारी, गृहस्वामी, श्रमिक, राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक आदि आते हैं। गृहस्वामी वाणिज्य के ज्ञान से अपने आय-व्यय को संतुलित करने का ढंग सीख जाता है। इस कार्य में उसको पारिवारिक बजट सम्बन्धी 'एंजिल्स के नियम' (Engel's Law) से पर्याप्त सहायता प्राप्त होती है। 'समसीमान्त उपयोगिता नियम' (Law of Equimarginal Utility) के ज्ञान से व्यक्ति कम-से-कम व्यय द्वारा अधिक से अधिक संतुष्टि प्राप्त करना सीख जाता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति 'उपभोक्ता की बचत' के सिद्धान्त से यह जान जाता है कि किन वस्तुओं पर धन का व्यय करने से उनको अधिक-से-अधिक संतुष्टि प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार वाणिज्य के ज्ञान से व्यक्ति को निम्नलिखित व्यावहारिक लाभ प्राप्त होते हैं :

(1) सीमित आय के व्यय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के साधनों का ज्ञान प्राप्त करता है।

(2) व्यक्तिगत बजट के आधार पर व्यय करके अपनी आय का सदुपयोग करना सीखता है।

(3) वस्तुओं के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

(4) आय को वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं पर व्यय करने के लिये साधनों का ज्ञान प्राप्त करता है।

(5) व्यक्ति अपनी बचत के विनियोजन (Investment) के विभिन्न ढंगों की जानकारी प्राप्त करता है।

(6) व्यापारी मुद्रा-प्रसार (Inflation) और संकुचन (Deflation) से प्राप्त होने वाले लाभों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक युग में वाणिज्य-शिक्षा अत्यधिक उपयोगी तथा महत्वपूर्ण है। इसका महत्व न केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही है, वरन् यह राष्ट्र तथा समाज की समृद्धि के लिये भी महत्वपूर्ण है।

Scanned by TapScanner